राज
कामिक्स
विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 121
जंग
इस विशेषांक के साथ टैटू मुफ्त
अनुपम
सुपर कमांडो ध्रुव

दुश्मन को मारने के लिए हथियार चलाना तो लाखों हाथों को आता है... लेकिन खास निशाने को नष्ट करने के लिए खास हथियार चलाना कुछ चुनिन्दा हाथों के बस की बात है।... जुर्म की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दुनिया के खास निशाने पर कई सालों से कुछ खास लोग विद्यमान हैं। नागराज, डोगा, स्टील, तिरंगा... और अब शक्ति। लेकिन जो दो कांटे जुर्म और आतंकवाद की छाती में काफी गहरे धंसे हुए हैं, वे हैं नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव! और आज इनमें से एक कांटा निकलने वाला है। क्योंकि एक खास दिमाग और एक जोड़ी हाथों ने आज वह हथियार बना लिया है, जो सुपर कमांडो ध्रुव का नामोनिशान तक मिटा सकता है... और इसे चलाने की जरूरत नहीं है, यह खुद चलता है—
नक्षत्र हर चीज में तुझसे बढ़कर है ध्रुव! दिमाग में, ताकत में, और कौशल में भी! मेरी उम्र भी तुझसे ज्यादा लम्बी है। क्योंकि कुछ ही पलों में तेरी जिन्दगी और मौत के बीच का जो फासला अभी तक कई सालों का था, वह सिमटकर एक पल का रह जाएगा!...
—लेकिन नक्षत्र जिन्दा! और अपनी बाकी जिन्दगी तेरी हस्ती मिटने की खुशी मनाने में बिताएगा!...
—आज खत्म हुआ मेरा वह इंतजार, जिसमें एक-एक पल एक-एक युग की तरह बीते...
—खत्म हो गया तू और जीत गया नक्षत्र यह...
जंग
कथा: जॉली सिन्हा
चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल कांबले
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

कहते हैं कि खोजने से तो 'भगवान' भी मिल जाते हैं। और चाहो तो शैतान भी-
और इस बार खोजने वाले की लम्बी खोज आकर खत्म हुई थी, राजनगर से लगभग पचपन किलोमीटर की दूरी पर स्थित सीतापुर शहर में लगे 'रोहिणी सर्कस' पर-
जो मशहूर था सिर्फ एक महान गुणी कलाकार नक्षत्र के कारण। जो जब अपने कारनामे दिखाता था तो मौत भी पीछे की सीटों पर दुबक जाती थी-
सर्कस जगत में ध्रुव के बाद यह पहली बार हो रहा है कि सर्कस के शो किसी एक कलाकार के दम पर हाउस-फुल जा रहे हैं।...
...क्योंकि इस कलाकार नक्षत्र का पालन-पोषण भी संयोगवश ध्रुव की तरह ही हुआ है। इसीलिए यह भी उसी की तरह हर फन में माहिर है।...
ऐसे कारनामे, जो इससे पहले कभी किसी ने सोचने की जहमत उठाई और न ही करने की हिम्मत दिखाई-

*इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें- प्रतिशोध की ज्वाला

दोस्त बनाने में वक्त लगता है ... दुश्मन बनाने में नहीं।
हां। वह हर एक तारीख को अपनी तनख्वाह के पैसे बैंक से निकालने जाता है। क्योंकि उसकी तनख्वाह सीधी बैंक में ही जमा करा दी जाती है। मैंने अपने सर्कस का एकाउंट भी वहीं खुलवा दिया है।
एक तारीख तो परसों ही है।
किसी भी महीने की आखिरी तारीख की रात लुटेरों के लिए काफी व्यस्त होती है-
तुम सरकारी कर्मचारियों को हम दूर से ही ताड़ लेते हैं बेटे। हम तेरे बाप हैं! सारी तनख्वाह अकेले ही घर ले जाएगा क्या?
ऐसा है इस बार तू ये माल अपने बाप को दे दे। अगले महीने तू अपनी तनख्वाह घर ले जाना।
ये गलत बात है। छोड़ दो मुझे!
ले छोड़ दिया तुझे! अब चुपचाप पतली गली से निकल ले। वरना तेरी बोटी-बोटी ऐसे ही काट डालेंगे जैसे एक महीने पहले तेरे ही एक भाई-बन्द को काट डाला था।
एक तो घूसखोर पैसे देने में आनाकानी कर रहा था और फिर बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगा था।
ओह! मेरे बिना मेहनत किए ही तुमने सब-कुछ उगल दिया। वरना एक महीने से पुलिस वाले बेचारे न जाने किस-किस पर शक करते घूम रहे थे।
ये तेरी आवाज को क्या हुआ? ये... ये बदल कैसे गई?
अभी तो सिर्फ आवाज ही बदली है...

असल बदली तो अभी बाकी है।
स... सुअर–सच कहा था ध्रुव।
हाँ, मैं। जब महीनों भर में पुलिस को उस बेचारे सरकारी क्लर्क के हत्यारों का कोई सुराग नहीं मिला तो मुझे यही तरीका अपनाना पड़ा।
क्योंकि मुझे पता था कि जिसने एक क्लर्क की तनख्वाह छीनी है, वह दूसरे सरकारी कर्मचारी की तनख्वाह छीनने की कोशिश जरूर करेगा। और उसी स्थान के आस-पास करेगा जहाँ से उस क्लर्क की लाश मिली थी।
कातिल कितना ही शातिर अपराधी हो, पर होता तो हत्यारा ही है–
और अगर उसको यह अहसास हो जाए कि वह पकड़ा जाने वाला है–
और उसे अहसास या शक तक हो सकती है तो वह चूहे से भेड़िया बन जाता है–
तूने हम तक पहुँचकर गलती की है ध्रुव। सच्चाई जानकर तूने खुद अपनी ही चिता की लकड़ियाँ सजा ली हैं। अब हम तुझे भी जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।
दिमाग से पागल या क्रोध से पागल हो चुके इन्सान की एक खासियत होती है, वह दूसरों को चोट पहुँचाते हैं तो एक खास आनन्द महसूस करता है–
लेकिन अपने शरीर की चोटों का उसे अहसास नहीं होता

वह तो बस, अच्छे प्रतिद्वंद्वी को मात देने के लिए बेताब रहता है—
लेकिन भेड़िए चाहे गिनती में जितने भी हों...
...और शेर अकेला हो, फिर भी भेड़िए शेर का शिकार नहीं कर सकते।
भड़ाक
यह सत्य, शहर में भी उतना ही सत्य है—
जितना कि जंगल में
अब जब तुम जेल में उम्रकैद काटोगे, तो काम भी करना पड़ेगा, तनख्वाह भी मिलेगी और तब तुमको उसका महत्त्व पता चलेगा।

एक तारीख को बैंकों में काफी भीड़ भाड़ रहती है। कई कंपनी वाले इसी तारीख को अपने कर्मचारियों को तनख्वाहें बांटते हैं–
और कई लोग अपनी तनख्वाहें बैंक से निकलने आते हैं–
सोनपुर में तो कोई ढंग का बैंक था नहीं आकाश! इसीलिए हमने राजनगर में अपना एकाउंट खुलवा लिया।
अच्छी तरह से समझ लो! क्योंकि हम अपने कलाकारों को हर हफ्ते तनख्वाहें बांटेंगे, और हर हफ्ते पैसे निकलवाने तुमको ही आना पड़ेगा।
लेकिन जरा सतर्क रहना यहां पर लूटपाट की वारदातें काफी होती हैं। गुंडे बदमाश हमेशा ताक में रहते हैं।
आप निश्चिन्त रहिए चेरी जी। आकाश जान दे देगा पर पैसे नहीं देगा।
जाल बिछना शुरू हो गया था–
शिकार यानी आकाश उसमें फंस भी चुका था–
अब इन्तजार था तो बस शिकारी यानी कमिश्नर राजन का–
ये लो! इस बैंक में तो फटाफट काम होता है। पैसे मिल गए। अब चलो।
एक मिनट रुकिए बाबा! जरा पैसे तो गिन लें। कम निकले तो अपनी जेब से भरना पड़ेगा।
और समय भी तो कटना है। ये कमिश्नर राजन अब तक क्यों नहीं–
...आ गया! अब नाटक शुरू!
आ– आकाश। मारे गए। उस पिस्तौल वाले को देख रहे हो न? यहां का बहुत बड़ा गुंडा है। इसने शायद हमको दो लाख रुपए निकलवाते भी देख लिया है। बाहर निकलते ही हमको लूट लेगा! ऐसा करो, तुम यह ब्रीफकेस लेकर बाहर निकलो। हम इसका ध्यान बंटाते हैं।
हाँ... ठीक है!...

* जुबिस्को के बारे में जानने के लिए पढ़ें-प्रतिशोध की ज्वाला और बहरी मौत

धांय
और अपनी योजना विफल होते देखकर चेरी बीच में न कूद पड़ती–
बचिए सर! वह आप पर गोली चलाने आ रहा है!
चेरी ने जानबूझकर, राजन मेहरा की ट्रिगर पर रखी उंगली को दबा दिया। एक घातक धमाका हुआ–
और निशानेबाज द्वारा दिशा दी गई हुई गोली, आकाश के सीने और पीठ को फाड़ती हुई बाहर निकल गई–
ओऽऽऽऽह!
यह तो मर गया! यह तुमने क्या किया? मुझ पर कूदी क्यों?
म... मुझे लगा कि वह आप पर गोली चलाने जा रहा है। मैं तो आपकी जान बचाने के लिए आप पर कूदी थी। मुझे क्या पता था कि आपसे गोली चल जाएगी।
एक चीत्कार के साथ आकाश के प्राण-पखेरू उड़ गए–
ओफ! डैम इट! खैर पुलिस हैडक्वार्टर को फोन करके मेरे पर्सनल गार्ड्स को बुलाओ!
बॉस का प्लान सफल हो गया था। कमिश्नर राजन के हाथों नक्षत्र का पिता आकाश मारा जा चुका था–

पहले ही

तुम एक बार बैंक में
गोली चला चुके हो...

उस मंदिर का मालिक था—

आऽऽऽह!

आ सकता हूं।

जैसे इसको कुछ खाने की चीज
मिल गई है

लेकिन इस
कि वह पेशेवर कलाबाजी
है। क्योंकि ऐसी हर्ट सिर्फ
के लिए प्रयोग करते हैं।

से टकराकर ध्रुव की ही तरफ

ओह! तुम्हारी बात सुनकर लग रहा है कि तुमने मेरे अपराध के लड़ने के तरीकों का अध्ययन बहुत अच्छी तरह से किया है। लेकिन मेरा रोहिणी सर्कल आने का पहला मकसद तुमको पकड़ना नहीं बल्कि तुम्हारी आँखें खोलना था!
मेरी आँखें तो पहले से ही खुली हुई हैं। पर तेरी आँखें हमेशा के लिए बन्द होने जा रही हैं ध्रुव! क्योंकि टाइमर मैंने तीस सैकंड पर सेट किया था, और वे तीस सैकंड...
--पूरे हो चुके हैं!
नक्षत्र को कूदते देखकर ध्रुव आने वाले खतरे को भांपकर पहले ही कूद चुका था--
मुझे बचाना या मारना तो ऊपर वाले के हाथ में है नक्षत्र! लेकिन तुम इस बैग में रखे वीडियो कैमरे में लगी कैसेट जरूर देख लेना! यह उसी बैंक के सिक्योरिटी कैमरे की कैसेट है, जहां तुम्हारे पिता मरे थे! इसमें उसी समय के घटनाक्रम की रील है! कैमरे के ही प्ले बैक फंक्शन पर तुम इसे देख सकते हो!
और इसे देखकर तुमको यह पता चल जाएगा कि यह षड्यंत्र किसका रचा हुआ था!
कैमरा केस
नक्षत्र को पकड़ाते हुए ध्रुव का शरीर तेजी से जमीन की तरफ बढ़ने लगा--

'स्काई डाइवरों' की तरह मेरे गिरने की गति भी अब एक समान हो गई है। यह अब और तेज नहीं होगी। इसको 'टर्मिनल वेलोसिटी' कहते हैं। अब मेरा शरीर ५५ मीटर प्रति सेकंड की गति से गिर रहा है। और इस गति पर मैं अपने शरीर को मनचाहे कोण पर मोड़कर मनचाही दिशा में गिरा सकता हूं। अब मुझे एक ही चीज बचा सकती है। और वह है...
—रोहिणी सर्कस का तंबू। इस तंबू के बाहर से गुजरते हुए मैंने इसके अन्दर वह जाल तना देखा था जिस पर झूले का करतब दिखाने वाले कूदते हैं। अब मुझे वह जाल ही बचा सकता है। तंबू की छत की तिरपाल से टकराकर तो मेरी गर्दन भी टूट सकती है। इस तिरपाल का इस्तेमाल स्पीड ब्रेकर की तरह करना होगा।
ध्रुव के ब्रेसलेट से स्टार ब्लेड निकलकर तिरपाल में वैसे ही छेद करने लगे जैसे लेटर पैड के कागजों के ऊपर होते हैं—
और फिर ध्रुव का शरीर जब तिरपाल से टकराया तो दो काम एक साथ हो गए। ध्रुव के शरीर की गति को इस टक्कर ने कम कर दिया, और ध्रुव के शरीर की टक्कर ने तिरपाल में छेद कर दिया—
और ध्रुव का शरीर उस छेद को पार करता हुआ जाल पर आ गिरा टकराया, उछला और फिर आ गिरा—
ध्रुव बच तो गया था! पर इस आघात से उसका मस्तिष्क कुछ पलों के लिए चकरा गया था—
और यह सारा दृश्य देख रहे ध्रुव के दुश्मन तुरंत वहां पर आ पहुंचे—
इतनी ऊंचाई से भी गिर कर बच गया? यह इंसान है या...
भूत?...
—अब तक तो नहीं है लेकिन अभी इसको भूत बना देता हूं।
लक्ष्य स्थिर था और चलाने वाले का

ताड़.
बस! अब और नहीं! तुम लोगों का षड्यंत्र यहीं पर खत्म होता है!
नक्षत्र! यह तुम क्या कर रहे हो?
प्रायश्चित कर रहा हूँ चुड़ैल! अपनी भूलों और गलतियों का प्रायश्चित!
क्रोध और शर्म से सुलगते नक्षत्र का अंतर जैसे लावे से भर गया था—
तड़ाक
होश में आओ नक्षत्र! पागल हो गए हो क्या?
पागल हो गया था मैं! तूने मुझे पागल बना दिया था! अब मुझे पता चल गया है कि गोली कमिश्नर साहब ने खुद नहीं चलाई थी!...
...वह गोली चेरी ने चलवाई थी! और यह षड्यंत्र जरूर तूने

■ नक्षत्र का क्या होगा, यह तो सिर्फ भविष्य को ही पता है। हम तो फिलहाल इंतजार कर सकते हैं और ...